भ्रमणकार्यक्रम:

राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधानशाला, लखनऊ (NRLC)

Registrar
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi

गुरुकुलशिक्षापद्धतिः

(गुरुकुलपद्धत्या अध्ययनं कुर्वन्तः छात्राः)

(गुरुकुलपद्धत्या अध्ययनं कुर्वन्तः वैदेशिकाः छात्राः)

Registrar
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

पत्रांक : प्र. 3/47 /2022 दिनांक 22.03.2022

कार्यालय-ज्ञाप

शिक्षाशास्त्र विभाग के तत्वावधान में संस्कृत सम्भाषण में छात्रों को प्रशिक्षित करने हेतु शिक्षाशास्त्र विभाग में दिनांक 28.03.2022 से 07.04.2022 तक 11 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन अपराह्न 02:00 बजे से सायं 04:00 बजे तक डॉ. विशाखा शुक्ला, सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग के संयोजकत्व में किया गया है। उक्त कार्यशाला में अधोलिखित विद्वानों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा।

1. डॉ. रविशंकर पाण्डेय, सहायक आचार्य, संस्कृत विद्या विभाग।
2. डॉ. विजय कुमार शर्मा, सहायक आचार्य, वेद विभाग।
3. डॉ. मधुसूदन मिश्र, सहायक आचार्य, ज्योतिष विभाग।

एतदर्थ प्रशिक्षकों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया जायेगा व कार्यक्रम हेतु किसी प्रकार का व्यय देय नही होगा।

इस पर आधिकारिक स्वीकृति प्राप्त है।

कुलसचिव

प्रतिलिपि :- निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित -

1. सचिव कुलपति को कुलपति महोदय के अवलोकनार्थ।
2. समस्त संकायाध्यक्ष/विभागाध्यक्ष।
3. वित्ताधिकारी।
4. आशुलिपिक, कुलसचिव/वित्त अधिकारी।
5. अधीक्षक (प्रशासन/लेखा)।
6. जनसम्पर्क अधिकारी।
7. सम्पत्ति कार्यालय।
8. उद्यान विभाग।
9. सम्बद्ध पत्रावली।

सहायक कुलसचिव (प्रशासन)

संस्कृत प्रशिक्षण शिविर

Registrar
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi

32 वां
रजत जयंती वर्ष
राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र
स्वतंत्र चेतना

संस्कृत भाषा के विकास के लिए संस्कृत में व्यवहार अनिवार्य-प्रो.रमेश प्रसाद

स्वतंत्र चेतना

वाराणसी। संस्कृत में बात करने से संस्कृत भाषा का अभ्यास सरल और शीघ्र हो जाता है। जो भाषा दैनिक व्यवहार में आती है वह बढ़ती है और उसका विकास होता है। संस्कृत भाषा के विकास के लिए संस्कृत में व्यवहार अनिवार्य है। लिखे हुए को पढ़ने की अपेक्षा बोली हुई भाषा का श्रवण करने से उसका सरलत से बोध होत है। ध्वनि अभिनय, मुख के भाव और परिसर वातावरण आदि इसके कारण है। अतः संस्कृत संभाषण से संस्कृत सरल है जनमानस में इस भावना का निर्माण होगा। संभाषण में चैतन्य होता है अतः अन्य व्यक्ति भी बोलने को उत्साहित होता है।

इस प्रकार संस्कृत भाषा व्यक्ति तक पहुँचती है! जाति, मत, प्रदेशादि भेद.भाव के बिना ही सब लोगों को इसका ज्ञान होत है।

उक्त विचार बतौर मुख्य अतिथि सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में शिक्षाशास्त्र विभाग के तत्वावधान दस दिवसीय कार्यशाला संस्कृत सम्भाषण का समाप्त समारोह में श्रमण विद्या संकायाध्यक्ष प्रो रमेश प्रसाद ने व्यक्त किया।

प्रो रमेश प्रसाद ने कहा कि संस्कृत भाषा संस्कृति की वाहिका है। इस कारण से यदि यह दैनिक व्यवहार में आती है तो संस्कृति के जीवनादर्शन भी व्यवहार में आयेंगे। सम्भाषण कार्यशाला की संयोजीका एवं शिक्षा शास्त्र विभाग प्राध्यापिका डॉ विशाखा शुक्ला ने सभी आगन्तुकों एवं प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षार्थियों का स्वागत अभिनंदन करते कहा कि संस्कृत संभाषण से लोगों के हृदय में स्वाभिमान का निर्माण होता है। समाज के उपेक्षित वर्गए जो लोग बहुत समय से संस्कृत शिक्षण से वंचित रहे उनमे संस्कृत शिक्षण से बहुत परिवर्तन होता है। समग्र देश के नगर व गाँव में संस्कृत संभाषण शिविर चलाने से ऐसा अनुभव हुआ है। इस प्रकार सामाजिक समरसता लाने में सामाजिक परिवर्तन करने में संस्कृत संभाषण की एक महत्वपूर्ण भूमिका होगी। डॉ विशाखा ने शिक्षाशास्त्री प्रथम एवं द्वितीय के छात्र . छात्राओं को इस अवसर पर कार्यशाला में प्राप्त अनुभव को साझा किया।

संस्कृत सम्भाषण के प्रशिक्षक डॉ रविशंकर पान्डेय ने दस दिवसीय कार्यशाला के रूपरेखा का सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत करते हुये कहा कि संस्कृत सम्भाषण के माध्यम से संस्कृत के सरलीकरण का प्रभाव व स्वतःआत्मिक लगाव बढ़ता है।इसी तरह से लोगों का जुड़ाव होता रहा तो एक दिन संस्कृत पुनःआमजन की भाषा सिद्ध होगी। मुख्यअतिथि प्रो.रमेश प्रसाद के द्वारा प्रशिक्षकों को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

(संस्कृत प्रशिक्षण शिविर)

(कार्यशाला आयोजन)

Registrar
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

पत्रांक : सं. 362 /2022 दिनांक : 15.03.2022

कार्यालय-ज्ञाप

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के तुलनात्मक धर्मदर्शन विभाग एवं सांख्ययोग विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दस दिवसीय आफ-लाइन/आन-लाइन कार्यशाला 'सांख्यकारिका (गौडपादभाष्य) स्वाध्यायशाला' का आयोजन किया गया है।

प्रो. मार्कण्डेयनाथ तिवारी, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली दिनांक 21.03.2022 से दिनांक 25.03.2022 तक तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में अध्यापन करेंगे तथा प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में दिनांक 28.03.2022 से दिनांक 01.04.2022 तक अध्यापन कार्य करेंगे।

इस पर आधिकारिक स्वीकृति प्राप्त है।

कुलसचिव

प्रतिलिपि :- निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित -

1. सचिव कुलपति को कुलपति महोदय के अवलोकनार्थ।
2. सचिव कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली को कुलपति महोदय के अवलोकनार्थ।
3. समस्त संकायाध्यक्ष/विभागाध्यक्ष।
4. प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, विभागाध्यक्ष, तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग।
5. प्रो. मार्कण्डेयनाथ तिवारी, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
6. उपकुलसचिव (सम्बद्धता/शैक्षिक)।
7. सहायक कुलसचिव (प्रशासन/लेखा)।
8. आशुलिपिक, कुलसचिव/वित्त अधिकारी।
9. अधीक्षक (प्रशासन/लेखा)।
10. जनसम्पर्क अधिकारी।
11. सम्बद्ध पत्रावली।

15/3/22

सहायक कुलसचिव (प्रशासन)

(कर्मकाण्ड)

(पाण्डुलिपि पुस्तकालय)

Registrar
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi

सांस्कृतिक संग्रहालय भ्रमण

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण केन्द्र, सारनाथ, वाराणसी

Registrar
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi